आर्योदय

ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Aryodaye No. 342 ARYA SABHA MAURITIUS *18th Sept. to 24th Sept. 2016*

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

Tryambakam yajāmahe sugandhim puṣṭivardhanam.
Urvārukamiva bandhanānmṛtyormukṣīya mā'mṛtāt.

Yajurveda Chap. 3 no. 60

Explanation **:– Tryambakam** – the almighty creator, **yajāmahe** – worthy of being prayed, **sugandhim** – pure and fragrant, **puṣṭivardhanam** – sustainer of man an soul, **Urvārukamiva** – as a ripe and sweet water melon, **bandhanān** – detached from its vine, liberation from bondage, **mṛtyorm** – end of life, death, **mukṣīyam** – free from birth and death, **āmṛtāt** – obtain, achieve liberation, salvation, deliverance

People of spiritual values and social behavior achieve liberation and delivrance after death as a water melon, when ripe and sweet gets detached from its vine.

Hiraṇmayena pātreṇa satyasyāpihitaṁ mukham.
Yo' sāvāditye puruṣaḥ so' sāvaham. Om khaṁ brahma.

Chapter 40 no. 17

Explanation **:- Hiraṇmayena** – with diamond, gold and silver, **pātreṇa** – cover lid, **satya asya** – this God, **āpihitaṁ** – covered, **mukham** – mouth, **yo' sāvāditye puruṣaḥ** - that is life or sun or the almighty God, **so' sāvaham** - and I am that God, **Om khaṁ brahma** - my name is brahma, creator and upholder of this creation.

Man's eyes, ears and minds are covered with lids of richness and fortune. So they cannot behold, hear and believe God. Human beings have lost all human values. They have better consideration for materialism than spiritualism.

Pt. Jaychand Aukhojee

धर्म-प्रेमी बन्धुओं से निवेदन

संस्कृत में प्रश्न किया गया कि सुख का मूल क्या है? उत्तर दिया गया कि धर्म सुख का मूल है। पाठकवृन्द ! जीवन में सभी जन सुख की कामना करते हैं। परन्तु धर्म ग्रन्थों का उपदेश है कि सुख के भागी वही बनते हैं, जो धर्म के मार्ग से मुख नहीं मोड़ते। धर्म-मार्ग पर वही व्यक्ति चल सकता है, जिसे धर्म का ज्ञान हो।

जीवन को सुखमय बनाने के उद्देश्य से 'ऋषि दयानन्द संस्थान' बीते कई वर्षों से धर्म के प्रचार-प्रसार में प्रयत्नशील है। इस संस्थान की ओर से निम्नलिखित सात धार्मिक परीक्षाओं की तैयारी करवायी जाती है :–

१. धर्म प्रवेश, २. धर्म परिचय, ३. धर्म भूषण, ४. धर्म रत्न, ५. धर्म वाचस्पति, ६. शास्त्री और ७. वेदवाचस्पति

'धर्म-प्रवेश' में उसी छात्र-छात्रा की भरती की जाती है, जो हिन्दी या अंग्रेज़ी का कामचलाऊ ज्ञान रखता हो।

सात वर्षों के नियमित अध्ययन के पश्चात् परीक्षार्थी 'वेदवाचस्पति' परीक्षा में बैठने के अधिकारी होते हैं। इस परीक्षा में उत्तीर्ण छात्र-छात्राएँ सम्पूर्ण यजुर्वेद का शुद्धोचारण एवं महर्षि दयानन्द के प्रमुख तीन ग्रन्थों – 'सत्यार्थप्रकाश', 'संस्कार विधि' और 'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका' का ज्ञान प्राप्त करके सैकड़ों मन्त्रों का भावार्थ करने में सक्षम हो जाते हैं।

'धर्म प्रवेश' और 'धर्म परिचय' की पढ़ाई मॉरीशस के आठ ज़िलों में नियुक्त योग्य अध्यापक-अध्यापिकाओं द्वारा होती है। शेष परीक्षाओं का शिक्षण-कार्य मात्र 'ऋषि दयानन्द संस्थान' में प्रति बुधवार और शनिवार को प्रातःकाल ९.०० बजे से तीन बजे तक होता है। परीक्षाएँ दिसम्बर मास के पूर्वार्ध में होती हैं। अक्तूबर मास के अन्त में उक्त परीक्षाओं का शुल्क लिया जाता है।

धर्म-प्रेमी छात्र-छात्राओं से निवेदन है कि विशेष जानकारी पाई ग्राम में स्थित 'ऋषि दयानन्द संस्थान' की सचिव से प्राप्त करें। फ़ोन नम्बर है - ५७६०११०५, २८६ ११५९

डा० उदय नारायण गंगू

हंसा गणेशी भवन में श्रावणी महोत्सव

२८ अगस्त २०१६ का दिन डॉ० हंसा गणेशी, मोरसेलमाँ न्यू ग्रोव आर्यसमाज के लिए बड़ा दिन रहा । श्रावणी महोत्सव के अवसर पर एकदिवसीय यज्ञ का आयोजन किया गया था, जो एकदम भक्तिमय रूप में चला। आर्य सभा के कुछ अधिकारी व्यस्त होने से समय नहीं दे पाये, परन्तु यज्ञ-प्रेमियों ने यज्ञ-स्थल पर अपनी उपस्थिति देकर हमें खुश कर दिया। यजमान परिवार ने बड़ी कुशलता दिखाई। सभी ने परिवार सहित, यज्ञ की शोभा बढ़ायी। हमारा आर्य मंदिर यज्ञमय हो गया था।

यज्ञशाला में ग्राँ पोर ज़िले की हमारी पण्डिताएँ उपस्थित थीं। श्रीमती प्रतिमा गोरिबा ने अपने मंत्रोच्चारण एवं सन्देश से लोगों को मुग्ध कर दिया। फिर पंडिता इन्दिरा माटर ने अपनी मधुर वाणी से लोगों को प्रसन्न किया । सुन्दर भजन गाकर लोगों का मन हर लिया । पं० माला संन्यासी और हमारी सहयोगिनी सान्ता देवी ने साथ दिया ।

इस धार्मिक समारोह में स्कूल के बच्चे उपस्थित थे, जिन्होंने पाठशाला का नाम रोशन किया। उन्होंने एक सुन्दर श्लोक गायन रूप में प्रस्तुत करके लोगों का मन मोह लिया । अन्त में संध्या के मंत्रों का उच्चारण करके लोगों को अति प्रसन्न कर दिया। उन्हें आशीर्वाद और बधाई मिली ।

हमारे न्यू ग्रोव गाँव में ऐसे अवसरों पर जो भी कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाता है, उनसे गाँव के लोग प्रभावित होते हैं। रास्ते चलते लोग बधाई देते हैं।

आर्य सभा ने स्वर्गीया डॉक्टर हंसा गणेशी के आर्थिक दान से 'हंसा गणेशी भवन' का निर्माण करके न्यू ग्रोव ग्राम में आर्यसमाज का झण्डा फहरा दिया ।

प्रेमिला तूफ़ानी

सम्पादकीय

एक कर्मयोगी आर्यपुत्र

परमात्मा की असीम कृपा से हमारे देश में कई ऐसे आर्य महापुरुष पैदा हुए, जो अपने अद्भुत तथा प्रेरणादायक कर्मों से हिन्दू समाज को सही मार्ग-दर्शन कराते रहे, उन कर्मठ आर्य पुरुषों में स्वर्गीय मोहनलाल मोहित जी एक आदर्श आर्य पुत्र थे।

तेजस्वी मोहनलाल जी बड़ी सुगमतापुर्वक शिष्ट स्वभाव द्वारा अपनी बाल्यवस्था पार करके एक आज्ञाकारी, स्वाध्यायशील, पुरुषार्थी और समाजसेवी नवयुवक बने। ईश्वर-भक्त, निस्वार्थ समाज सेवी, व्रती और तपस्वी का प्रमाण देकर वे एक कर्मठ गृहस्थी हुए और बड़ी ही सूझ-बूझ, बुद्धिमता से तथा मितव्ययी बनकर गृहस्थ-जीवन का कर्त्तव्य निभाते रहे। अपने परिवार तथा आर्यसमाज के उत्थान में एक आदर्श रूप प्रस्तुत करते रहे। वे एक श्रेष्ठ कृषक और एक महाप्रतापी आर्य सेवक कहलाए। जिन लोगों ने उनकी संगति की तथा उनकी सलाह को अपनाया, उन भाग्यशाली जनों की प्रगति होती गई।

सुसंस्कारी मोहित जी सदा वैदिक-धर्म का प्रचार-प्रसार करते रहे, भारतीय संस्कृति, भोजपुरी और हिन्दी भाषा के पुजारी बनकर जीवन पर्यन्त धोती, रूमाल, पगड़ी धारण करते रहे और अपनी मातृभाषा से प्यार करते रहे। सदाचारी मोहनलाल जी धार्मिक प्रवृत्ति वाले प्राणी थे, वे सदा कहते थे - जो ध्यावे फल पावे, दुख बिनसे मनका, सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तनका। वे यही शिक्षा देते रहे कि जो श्रद्धापूर्वक ईश्वर का ध्यान करता है, और निस्वार्थ सामाजिक उद्धार करता है, उसे भौतिक तथा आध्यात्मिक सुख, शान्ति और आनन्द प्राप्त होता है। इसी बल पर उन्हें दीर्घायु प्राप्त हुई; वे १०३ वर्ष तक सुखमय, शान्तिमय एवं आनन्दमय जीवन व्यतीत करते रहे।

स्वर्गीय मोहनलाल मोहित जी अस्सी (८० वर्ष) तक निरन्तर बड़े ही सद्भाव, प्रेम, उत्साह और निष्ठता से आर्यसमाज के उत्थान में अपना जीवन समर्पित करते रहे ।

वैदिक धर्मी मोहनलाल जी का प्रेरणादायक एवं शिक्षाप्रद समर्पित जीवन आज की युवा पीढ़ी के लिए प्रभावित करने वाला है। हमारे युवक-युवतियाँ अगर उनके नियन्त्रित तथा अनुशासित जीवन से शिक्षा ग्रहण करेंगे तो अवश्य ही उनका जीवन सफलता की ओर अग्रसर होता जाएगा। वे सुसंस्कारी, धार्मिक, सामाजिक और सुधारवादी बनकर अपना नाम रोशन कर पाएँगे।

आर्य सभा के तत्वावधान में मोका आर्य ज़िला परिषद्, मोहनलाल मोहित फाऊण्डेशन, तथा लावेनीर आर्य समाज और मोहित परिवार की ओर से स्वर्गीय मोहनलाल मोहित जी की ११४ वीं वर्षगाँठ के अवसर पर एक स्मृति यज्ञ का आयोजन लावेनीर आर्य मन्दिर में आगामी रविवार दिनांक २५ सितम्बर २०१६ को किया जा रहा है। उक्त समारोह में भाग लेने के लिए आप सादर आमंत्रित है।

बालचन्द तानाकूर

गतांक से आगे

रामपरसाद निऊर

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के.,आर्य रत्न, मंत्री आर्य सभा मॉरीशस

सन् १९५० के वर्षों में ही सुखू जी भारत पहुँचे। उस समय उनका ज्येष्ट पुत्र रुद्रसेन निऊर डॉक्टरी सीख रहे थे। अपने पुत्र को लेकर आप अजमेर पहुँचे, जिस अजमेर में स्वामी दयानन्द का निर्वाण हुआ था और उनकी अन्त्येष्टि क्रिया हुई थी और जहाँ स्वामी जी द्वारा गठित प्रचारिणी सभा है। वहाँ अधिकारियों से मिलकर विद्या विनोद, विशारद आदि की परीक्षाएँ मोरिशस लाये। मोरिशस आर्य सभा की विद्या समिति ने खूब प्रचार किया वैदिक धर्म, संस्कृति और हिन्दी भाषा का। वर्षों तक 'विनोद' से लेकर वाचस्पति तक खूब प्रचार कार्य हुआ। मेरी जानकारी में है कि न केवल आर्य समाजी विद्यार्थी उन सब परीक्षाओं की तैयारी करके सफल हुए बल्कि गैर आर्य समाजियों के साथ दूसरे धर्मावलम्बियों परीक्षार्थी भी प्रमाण पत्र प्राप्त करके सरकारी हिन्दी अध्यापक बनें ।

रामपरसाद जी का व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन तो अति सफल रहा है, उनका पारिवारिक जीवन भी आसमान को छू गया। रुद्रसेन से लेकर अमीचन्द तक सब के सब, सरकारी अधिकारी बनें। कोई डॉक्टर के रूप में तो कोई राजनयीक (Diplomat) की हैसियत से। उनकी दो पुत्रियों में से एक तो सरकारी पाठशाला की हिन्दी अध्यापिका के बाद तरक्की पाकर अवकाश लेने से पहले उप-मुख्य अध्यापिका का दर्ज़ा पा लिया था।

उनकी निस्वार्थ सामाजिक सेवा देखते हुए तत्कालीन प्रधान मंत्री सर शिवसागर रामगुलाम की सलाह पर इण्गलैण्ड की महारानी एलिज़बेथ ने श्री राम परसाद जी को एम.बी.ई (Member of the British Empire) के पद से संवारा था। आर्यसभा और देश के विभिन्न संस्थाओं की ओर से भी उन्हें सम्मान मिलता रहा। उनके जीवन काल में न मोरिशस की ओर से और ना ही आर्य सभा की ओर से अभी सम्मानित करने की परिपाटी शुरू हुई थी। आर्य भूषण की पदवी तो जब हम सभा की अन्तरंग समिति में प्रवेश हुए तो आर्य भूषण से सम्मानित करना आरम्भ कर दिया गया था। यह बात मोरिशस के गणराज्य होने से कुछ दिन पहले हुई थी। ठीक १९९२ में जब स्वतन्त्र मोरिशस को जनतन्त्र के स्तर पर लाया गया तब इंगलैण्ड की पदवियों को त्याग कर हमारा अपना पद दिया गया एम०एस०के०, ओ०एस०के० वगैरा।

सुखू रामपरसाद निऊर जी न केवल वाणी का प्रयोग नहीं करते थे भाषा, धर्म और संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए, बल्कि वे कलम के भी धनी थे। वे अपने समय के सभी हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में लेख लिखते थे जैसे जागृति, जनता और आर्योदय आदि। लेखों के अलावा उन्होंने 'मेरी लन्दन यात्रा' नाम की पुस्तिका भी लिखकर प्रकाशित करवाई थी। मुझे वह पुस्तिका देखने और पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

सुखू जी ने यद्यपि राष्ट्रीय स्तर की राजनीति में केवल अपना सक्रिय सहयोग प्रदान किया वह भी उस पार्टी के उम्मीदवारों को जो देश की स्वतन्त्रता के लिए कार्यरत थे पर ग्राम परिषद् के चुनाव में तभी से अपनी उम्मीदवारी रखने लगे जब से स्थानीय प्रशासन का प्रवेश गाँवों में हुआ। ग्राम परिषद् के चुनाव में वे कई बार चुने भी गये और कभी मनोनीत भी होते रहे। कभी कभी चुनाव में प्रथम स्थान प्राप्त करते थे। इतनी उनकी प्रसिद्धि थी। लोग उनकी अथक और नि-स्वार्थ सेवा को मानते थे। आर्यसमाज को आधी शताब्दी तक सेवा प्रदान करने के कारण तो राष्ट्रीय स्तर पर माने जाने वाले नेता बन गए थे। पर राजनैतिक क्षेत्र तो उतना विस्तृत नहीं हुआ। आसपास के निम्न इलाकों में प्लेन दे पापाय, फोंजी साक, त्रियोले आदि में खूब नाम कमाया।

जब स्वामी दयानन्द द्वारा आर्यसमाज की स्थापना हुई तो आगे चलकर सुधि आन्दोलन शुरू हुआ। सब से पहले स्वामी श्रद्धानन्द और पंडित लेखराम बहुत सक्रिय हुए और उनके बलिदान का मुख्य कारण हुआ। मोरिशस में भी २०-२५ के वर्षों में शुद्धि आन्दोलन शुरू हुआ था। इस क्षेत्र में भी सुखू रामपरसाद ऐसे बहुत लोगों को वैदिक धर्म में वापस लाये जो अज्ञानतावश या नौकरी प्राप्त करने के लालच में या किसी दूसरे कारण से धर्म परिवर्तन कर चुके थे। गैर हिन्दू भी जिसने स्वेच्छा से वैदिक धर्म अंगीकार किया था, उनकी भी सहायता करने में सुखू जी तत्पर रहे ।

सुखू जी का ध्यान समाज का कल्याण कैसे हो, इस बारे में वे सतत् सोचते रहते थे। जिस इलाके के वे वासी थे उस इलाके में बहुत छोटे-छोटे किसान रहते थे जिनको बैंक से उधार मिलने में कठिनाइयाँ होती थीं। उन्होंने एक दिन सोचा क्यों न एक (Co-operative Credit Society) कोर्पेरेटिव क्रेडिट सोसाईटी स्थापित की जाए। सब ऐसी (Society) सोसाईटी को एक नाम होता है। वे तो स्वामी दयानन्द के एक पक्के भक्त थे। क्यों न नाम रखा जाए। (Dayanand Co-operative Credit Society) दयानन्द कोरपेरेटिव सोसाइटि। बस वही नाम धर दिया। यह सन् १९६० की बात है। अब पंजीकरण में कठिनाई हुई क्योंकि लोग दयानन्द के नाम से चिढ़ते थे। लेकिन चिढ़ने वाले जो मुखिया थे उनके बेटे का पहला नाम दयानन्द था। सुखू जी के कहने पर मान गया। वह दयानन्द क्रेडिट सोसाइटी आज भी ज़िन्दा है।

आर्यभवन के सामने वाली गली फेलिक्स दे वाल्वा (Felix de Valois) नाम से जानी जाती थी। १९७३ में आर्यसमाज का अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन उसी गली के प्रसिद्ध ताहेर बाग में लगा था। उसी के दौरान सुखू जी रामपरसाद ने एक प्रस्ताव रखा कि उस गली का नाम रखा जाए 'महर्षि दयानन्द स्ट्रीट'। इस प्रस्ताव को सर्वसम्मति से पारित किया गया। यह एक ऐतिहासिक बात थी जिसका अधिक श्रेय उन्हीं को जाता है।

सुखू जी का देहावसान २२ नवम्बर सन् १९८३ में (Neewoor Street) निउर स्ट्रीट, ले ओसे (Le hochet) में ७८ वर्ष की आयु में हुई। वे अपने सेवाक कार्य के लिए युगों तक ज़िन्दा रहेंगे।

सम्पादकीय नोट –

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध नेता स्वनामधन्य श्री मोहनलाल जी मोहित की स्मृति में प्रतिवर्ष बाईस सितम्बर को उनकी वर्षगाँठ के शुभावसर पर लावेनिर आर्य समाज में, लावेनिर आर्य समाज, मोका आर्य ज़िला परिषद् एवं आर्य सभा के सहयोग से एक श्रद्धांजलि-यज्ञ सम्पन्न किया जाता है । इस महान् समाज सेवक के यशोगान में महानुभावों द्वारा वक्तव्य दिये जाते हैं। 'आर्योदय' पर लेख प्रकाशित किये जाते हैं। प्रस्तुत अंक में सम्पादकीय के अतिरिक्त उनकी सुपुत्री का लेख पठनीय है।

डॉ० उदय नारायण गंगू

एक चिरस्मरणीय समाजसेवी को श्रद्धांजलि

श्रीमती भगवन्ती घूरा

बाईस सिप्तम्बर को आर्य नेता श्री मोहनलाल मोहित जी की एक सौ चौदहवीं वर्षगाँठ पड़ रही है। श्रद्धापूर्वक हम उस महान् आत्मा को नमन करते हैं। ग्यारह साल बीत गये आप हमारे मध्य में न रहे, फिर भी आज तक हम आपके प्रेरणादायक और अनुकरणीय जीवन के प्रभाव से आगे बढ़ रहे हैं।

आपकी स्मृति में एक लघु सार :-

नेता जी पाये थे आत्मा महान्, जीवन बना कीर्तिमान्
उज्ज्वल जीवन का साधन था, कर्म और धर्म का परिधान
कर्मठ समाज सेवी से रहा आर्य जगत् गतिमान ।
वैदिक ज्ञान का सार है, मानव मात्र का कल्याण ।
घर-घर पहुँचाना था वेद ज्ञान का सोपान ।
विवेक और सेवा से सजे थे वैदिक धर्म के यजमान ।
वेद वाणी 'जीवेम शरदः शतं' का रखे मान ।
शतायु बनकर ही कर्मशील जीवन से किए प्रयाण ।
ध्रुव तारा जैसे है अनुपम आर्य जगत् में उनका स्थान ।
ऐसे जन से ही रहता आर्य समाज का मान।
गूँजता रहे वेद ज्ञान का गान, था उनका अरमान ।

कर्म और धर्म की उपासना से आपका जीवन श्लाघनीय बना रहा। ईश्वर की कृपा से आपका जन्म एक श्रमी और धार्मिक परिवार में हुआ था। अल्पकाल से ही काम करना और सत्संग में जाना आदत बन गयी थी। उस समय रामायण की कथा का प्रचलन था और सत्संग में रामायण की शिक्षा से ही ज्ञान पाते थे। बहुत चाव से आप भी उसमें भाग लेते थे।

आगे चलकर आपके जीवन में एक नया मोड़ आया। एक उत्कृष्ट वैदिक धर्म प्रचारक पंडित काशीनाथ किष्टो जी का प्रवचन सुनने का अवसर प्राप्त हुआ। उनके प्रभावशाली वचनों से आप तर गये। आपने आर्यत्व को अपनाने की ठान ली। सात्विक खान-पान, रहन-सहन और विद्यार्जन पर अमल करने लगे। जीवन के मध्यकाल तक आप एक समृद्ध परिवार के स्वामी, सफल कृषक और साथ में एक कर्मठ समाज सेवक बन गये। वैदिक धर्म के दृढ़ अनुयायी बने और परोपकार का मार्ग अपना कर आगे बढ़ते रहे। ज्ञान बढ़ता गया, सत्संगी जनों के सम्पर्क में आते रहे और अकसर कहा करते थे 'सत्संग बिना विवेक न होय।' आप समय के पाबंद थे। आपके निश्चित कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न होते रहे। आर्यसमाज के उत्थान और वृद्धि में तन-मन-धन निछावर करते रहे। देश भर के आर्य जनों को सत्संगी बनने के लिए प्रोत्साहित करते रहे। विदेशों में भी आर्य जनों से सम्पर्क रखते थे और सहायता भी पहुँचाते थे। वेद वाणी – **'कृण्वंतो विश्वमार्यम्'** और गुरु देव दयानन्द की शिक्षा का प्रचार-प्रसार करना आपका लक्ष्य बन गया था। वेद-ज्ञान की धारा से जन-जन को प्रकाशित करना था जो आर्य समाज द्वारा मुमकिन था। ज्ञान और कर्म की उपासना से चाह की राह खुलती गयी। आर्यसमाज बुलंद हुआ और आप सभा के नेता बने। सात्विक और यज्ञमय जीवन से आप दीर्घकाल तक स्वस्थ और कर्मशील एवं त्यागी बने रहे।

सूर्यग्रहण

एस. प्रीतम

वर्ष था १९०१, आज से ठीक एक सौ पन्द्रह वर्ष पहले जिस साल में मोहनदास गांधी मोरिशस पहुँचे थे। इसी प्रकार का एक सूर्यग्रहण लगा था, जब चन्द्रमा सूर्य और पृथ्वी के बीचो-बीच आकर सूर्य को लगभग ढंक दिया था । इस साल पिछले गुरुवार दिनांक १ सितम्बर को लगभग उसी प्रकार का ग्रहण लगा जिसके दर्शन करने के लिए लोग बहुविध प्रकार से तैयार हो गए थे।

मामुली चंद्र एवं सूर्य ग्रहण तो लगा ही करता है पर इस प्रकार का सूर्यग्रहण अब २०० वर्ष बाद लगेगा। उसे देखने के लिए हम में से कोई नहीं होगा।

१ ली सितम्बर २०१६ को सूर्यग्रहण शुरू हुआ १२.०० बजकर २७ मिनट पर और समाप्त हुआ ३.०० बजकर ४४ मिनट पर । मोरिशस ज्योतिष शास्त्र के जानकार श्री भास्कर देसाई ने बताया था कि मोरिशस में ९२% सूर्य ढंकेगा, रोड्रिग में केवल ७५% जब कि रेन्यन के उत्तर में ९६% और दक्षिण में ९८% क्रम से सें देनी और सें पियेर में। इन सब बातों को देखते हुए बहुत से हमारे हमवतन रेन्यन टापू गए और उनमें मोरिशस ज्योतिष संघ के अध्यक्ष श्रीमान् रिको-ओक्बर भी थे। १०,००० के लगभग पर्यटक उस सूर्यग्रहण को देखने के लिए गए हुए थे।

२०० वर्ष बाद हमारी आने वाली पीढ़ी आर्योदय पढ़ेगी तो मालूम होगा कि हम भी उस चमत्कृत घटना के साक्षी थे।

आप के पत्र

आर्योदय के अगस्त महीने २०१६ के अंक ३३७ में, श्री नरेन्द्र घूरा जी का लेख, 'तैंतीस देवता' ज्ञानवर्धक है। बहुत बारीकी से उन्होंने अथर्ववेद के मन्त्र को फ्रेंच में स्पष्ट किया है। अविद्या-अन्धकार में फँसी हुई जनता को, वेद-ज्ञान के माध्यम से बताया है कि ईश्वर एक है। परमात्मा के सामर्थ्य से ही 'वसु' आदि पदार्थ, संसार को धारण करते हैं। उनका यह लेख प्रशंसनीय है। जिन्हें हिन्दी नहीं आती है, उनके लिए यह अत्यन्त लाभदायक है। श्री नरेन्द्र घूरा जी को कोटिशः धन्यवाद है।

पण्डिता चन्द्रिका राजु

आर्योदय अगस्त २०१६ का ३३८ अंक हाथ में आया। श्री बालचन्द तानाकूर जी का लेख 'ईश्वर-भक्ति का प्रताप' पढ़कर मन को प्रसन्नता हुई। उन्होंने ईश्वर-भक्ति पर अपना अनुभव स्पष्ट किया है कि ईश्वर भक्ति में अपार शक्ति है। इससे हमारी शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक और आत्मिक शक्ति प्रबल हो जाती है।

श्रावणी मास में जब देश के चारों ओर यज्ञमय वातावरण छाया हुआ होता है तब हर शाखा-समाज और घर-घर में यज्ञ-महायज्ञों का भव्य आयोजन होने से हमारा मॉरीशस यज्ञ की सुगन्धित आहुतियों से कितना शुद्ध-पवित्र हो जाता है। सारा देश वेद के मंत्रों से गूँज उठता है । जन-जन को परमात्मा का संदेश वेद-मंत्रों के द्वारा श्रवण करने का अवसर प्राप्त होता है। लेखक समझाते हैं कि जो व्यक्ति प्रभु की भक्ति में लीन होता है, वह अपने अंतःकरण को शुद्ध करने में सफल होता है। इसी पत्रिका के दूसरे पृष्ठ में माननीय लेखक श्री सुकराज बिसेसर जी ने इसी मास में मनाये जाने वाले 'रक्षा बन्धन' जैसे पवित्र घागे के त्योहार पर अपना विचार सुन्दर शब्दों में लिखा है । बहनें भाइयों के दाएँ हाथ की कलाई में राखी बाँधती है। 'रक्षा बन्धन' केवल एक दिन के लिए नहीं, अपितु यह जीवन पर्यन्त की प्रतिज्ञा है, जो भाई अपनी बहन की रक्षा के लिए करता है ।

लेखक लिखते हैं कि रक्षा-बन्धन का सम्बन्ध सीधे श्रावणी महोत्सव से जुड़ा है। श्रावणी मास ही में पुरोहित अपने यजमानों को पुराना यज्ञोपवीत उतरवाकर नया यज्ञोपवीत धारण करवाते हैं।

सविता तोकूरी

आर्योदय का अंक ३४१ पढ़ा। कई लेखकों के लेखों से अच्छी जानकारी मिली। श्री सत्यदेव प्रीतम जी ने अपने लेख में श्री रामपरसाद निऊर के जीवन चरित्र को बड़े ही सुन्दर ढंग से उभारा है। इस महापुरुष के कार्यों को उन्होंने पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास किया है।

हम आर्योदय के माध्यम से घर बैठे आर्यसमाज के कार्यों से अवगत हो जाते हैं। पंडित-पंडिता गण विवाह संस्कार सम्पन्न करते हैं। वर-वधू को वैवाहिक जीवन को सुखी बनाने का सन्देश देते हैं। श्री बालचन्द तानाकूर जी ३ सितम्बर के सम्पादकीय में लिखते हैं – "दाम्पत्य जीवन सुचारु रूप से व्यतीत करने के लिए पूरे अनुभव की आवश्यकता होती है, ज्ञान और अनुभव प्राप्त किए बिना विवाह के बन्धन में बन्ध जाना नादानी है। इसीलिए विवाह से पूर्व वर-वधू दोनों का वैवाहिक जीवन के सम्बन्ध में पर्याप्त अनुभव प्राप्त करना अति आवश्यक समझा जाता है।"

श्री देवनारायण कोन्हाय जी ने अपने लेख में वर्णों के कर्त्तव्यों पर अच्छा प्रकाश डाला है।

कविता सामा

Invitation

Rodrigues Hindi Speaking Union & Rodrigues Arya Samaj
in collaboration with
High Commission of India
cordially invite you and your family to be present at the
Celebration of Rodrigues Hindi Diwas 2016
on Thursday 13 October 2016 at 4.30 P.M @ le Flamboyant Hotel , Port Mathurin

Chief Guest : His Excellency Mr Paramasivum Pillay Vyapoory,G.O.S.K, Vice- President of Republic of Mauritius.

Guest of Honour : His Excellency, Shree Abhay Thakur, High Commissioner of India

Dr Vinod Kumar Mishra, Secretary General, World Hindi Secretariat,

Dr Oudaye Narain Gangoo, Ph.D,O.S.K,Arya Ratna,President, Arya Sabha Mauritius,

Members of Rodrigues Regional Assembly and Other Eminent Personalities will grace the Hindi Diwas

The Programme will comprise of Mahayajya, Cultural Show, Welcome Address, Speeches & Prize giving ceremony.
Mahaprasad will be served on that auspicious occasion
We hope to be honoured by your esteemed presence with your family and friends.

Welcome to Rodrigues

Group package also available to Arya Samajists keen to grace Hindi Diwas & Holiday in Rodrigues. Rs10,500/ per Person for 3 Nights which includes: Return Air Ticket, VEG Food & Accomodation, Airport Transfer and Sight -Seeing Tour. For more information concerning Hotel Reservation and Voucher, you may contact the promoter Mr R.CHEETOO, Tel: 544-31-544, at the earliest.

Thanking you for your kind Cooperation and Contribution for the good development of Hindi & Vedic Culture in Rodrigues.

क्या कारण है कि महिलाएँ-पुरुषों की अपेक्षा अधिक स्वस्थ, सानन्द दिनचर्या व्यतीत करती हुई अधिक लम्बी आयु तक जीवन जीती हैं ?

एक तुलनात्मक अध्ययन से पता चला है कि नारियाँ पुरुषों की अपेक्षा अधिक लम्बी आयु जीती हैं।

यद्यपि नारियों को कमज़ोर मानने के अन्य भी शारीरिक कारण गिनाये जा सके हैं, जैसे नारियों के शरीर का ताप पुरुष से अधिक होना, इसलिए प्रति मिनट पुरुष की नाड़ी स्पन्दन ७० और नारी का ८० होता है। ऐसे ही प्रति मिनट श्वास की गति नर की १५ और नारी की १७ होती है। मांसपेशियों का वजन पुरुष में ४०० तथा स्त्रियों में ३५० होता है। इसी प्रकार एक पुरुष में रक्त का वजन १०६० जब कि स्त्रियों में १०५० होता है। हाथ और अँगूठे भी पुरुषों की तुलना में छोटे होते हैं, सन्धियाँ भी छोटी, तर्जनी भले ही लम्बी होती है। पुरुष का प्रायः २ फूट ४ इन्च मेरूदण्ड होता है, जबकि औसत स्त्री के २ फूट ही रहता है, और अस्थि पुरुष की ४७-३ और नारी की मात्र ४१-३ होती है। पैर की हड्डी (टीविया) पुरुष की ७८-५ और नारी की ६७-८ होती है। स्त्रियों के पैर भी पुरुषों की अपेक्षा कुछ छोटे ही होते हैं। स्त्रियों का वस्ति गट्हर ९०-१०० होता है, जबकि पुरुषों का ७०-७५। मस्तिष्कीय पदार्थ पुरुष का ४९ औंस, जबकि नारी का ४४ औंस ही पाया जाता है। हृदय पिण्ड पुरुष का १० से १२ औंस और स्त्रियों का ८ से १० औंस होता है। पुरुष और स्त्री वर्ग के फेफड़े का आनुपातिक वजन क्रमशः १४०० ग्राम और १२६० ग्राम के योग में होता है। गुर्दे नारी के ४ से ५.५ औंस जबकि पुरुषों के ४.५ से ६ औंस तक के होते हैं।

इन सभी बाहरी शारीरिक क्षमताओं की दृष्टि से पुरुष भले ही सशक्त दिखाई दे, परन्तु आन्तरिक जीवनी शक्ति की दृष्टि से नारियाँ कहीं अधिक समर्थ होती हैं। प्रकृति द्वारा स्त्रियों को अनेक विशेष अनुदान व वरदान मिले हैं जो पुरुषों की अपेक्षा उन्हें अलग ढंग से मजबूत बनाते हैं।

अतिरिक्त अनुदानों में एक है - 'इस्ट्रोजन' नामक हारमोना यह एक ऐसा अमोघ अस्त्र है, जो स्त्रियों को हृदय संबंधित किसी भी प्रकार से आघात को सहने की शक्ति देता है, जबकि पुरुष इस मामले में कंगाल हैं।

मनः चिकित्सक भी मानते हैं कि किसी समस्या के समाधान में हृदय की धड़कन बढ़ाने वाले तत्व 'एड्रिनल' नामक हारमोन स्राव को इस्ट्रोजन नामक तत्व पूरी ताक़त से रोकता है जो केवल स्त्रियों में पाया जाता है।

शरीर विज्ञानियों का मानना है कि नारियों की आंतरिक प्रतिरक्षा प्रणाली पुरुषों की अपेक्षा कहीं अधिक सशक्त इसलिए होती है, क्योंकि उनमें एक विशिष्ट प्रकार का 'इग्यूनोग्लोबुलिन-एम' नामक प्रोटीन पाया जाता है, जो पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों के शरीर में अधिक बनता है। यही कारण है कि वे पुरुषों से अधिक स्वस्थ, सानन्द दिनचर्या व्यतीत करते देखी जाती है।

कोमलता भी नारियों की विशिष्ट विशेषता है। भावनात्मक विशेषताओं में भी नारी का कहना ही क्या!

महिलाओं में 'एक्स क्रोमोज़ोम' पाया जाना भी एक विशेष उपहार है। यही नहीं एक्स (x) क्रोमोज़ोम, वाई (y) की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली होने के कारण ही महिलाओं में रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिकतम होती है। इस वजह से विश्व के अलग-अलग देशों में आहार, जीवन-शैली के बावजूद सभी देशों में एक बात समान है कि महिलाएँ अधिक लम्बी आयु तक जीवन जीती हैं। सम्पूर्ण विश्व में अस्सी वर्ष से अधिक उम्र की महिलाओं की संख्या पुरुषों की अपेक्षा लगभग दो गुनी है।

डॉक्टर विनय सितिजोरी
बी.ई.,एम.एस.,बी.एन,वाई.एस.

M. Mohunlall Mohith – un digne disciple du Swāmi Dayānanda Saraswati et un grand patriote

Naraindra Ghoorah

Au dix-neuvième et vingtième siècles, si L'Occident pouvait s'enorgueillir de ses percées (progrès rapides et spectaculaires) dans les domaines de la science, de la technologie et de l'industrie, avec pour conséquence, l'acquisition et l'accumulation des richesses matérielles considérables; L'Orient, L'Inde en particulier, avait la bénédiction divine et le plus grand honneur d'avoir parmi ses fils du sol, deux grandes âmes : Mahārishi Dayānanda Saraswati et Mahatma Gandhi – deux grands sages, patriotes, humanistes, et messagers de la non-violence, de la paix, de la vérité et de l'unité. Ceux-ci, par leurs comportements et leurs actions, ne glorifièrent pas seulement L'Orient, mais l'humanité toute entière et laissèrent leurs empreintes indélébiles dans l'histoire du monde.

Simultanément il y avait M. Mohunlall Mohith, leur contemporain et un rude travailleur social, qui était très actif dans le pays pour l'enseignement et la propagation de la langue Hindi et de la Culture Védique à travers Le Mouvement 'Arya Samaj'.

M. Mohunlall Mohith etait un grand philanthrope. Il avait été actif sur le terrain le plus longtemps. Il avait consacré plus de 80 années de sa vie au service sans relâche et volontaire de son pays et de L'Arya Samaj en particulier.

De par ses attitudes, c'est-à-dire, son dévouement, son comportement, ses attitudes positives, son abnégation, ses actions, ses sacrifices et ses donations conséquentes pour la cause sociale, il fut surnommé 'Arya Neta', c'est-à-dire, Le Leader et Le Pilier de L'Arya Samaj de L'île Maurice par ses proches collaborateurs et les autres Arya Samajistes.

Il était la personnification même de la culture Védique et vécut jusqu'à l'âge de 103 ans. It eut l'insigne honneur de côtoyer et de travailler avec presque tous les grands dirigeants de l'Arya Samaj du monde et de L'île Maurice aussi bien qu'avec les chefs d'autres religions, les responsables des ONG et d'autres travailleurs sociaux, et Le Premier Ministre, les Ministres, les Députés et tous les politiciens de tous bords de L'île Maurice.

Après cet exposé des faits historiques et des conditions sociales vécues par nos ancêtres, nous pensons maintenant évoquer et réfléchir brièvement sur la vie de ce grand tribun, voire le pilier de L'Arya Samaj, M. Mohunlall Mohith, afin d'aider nos lecteurs et surtout les jeunes et les Arya Samajistes qui sont actifs sur le terrain, de s'inspirer en prenant connaissance de son travail immense dans le domaine social et culturel.

Kriyatmak Yog Series (4)

Maharshi Patanjali's YOGA DARSHANAM

Practical applications of Yoga in daily life

2.0 Sādhana Pāda

Yama (social discipline) are virtues which empower the individual to elevate himself from man to human being, thus contribute to the health and happiness of society.

Niyama (personal discipline) refer to the attitude we adopt toward the self as we strive to live spirituality (spiritual + reality).

Yama – Niyama are not intended merely for parrot-like study. The pristine Vedic methodology of study is a four-fold process :

Shravana -- Careful listening (includes acquisition of knowledge by the *jnanendriyan* or sense organs of perception

Manana -- Contemplate, think deeply and carefully,

Nididyāsana -- Weigh the pros & cons to reach safe conclusion

Shākshātkāra -- Realisation of the learning objective, application in real life situations

Applied in Yoga the learning process empowers the learner to attain a way of life ruled by both external and internal purity; harmony between thoughts, speech and deeds; peace …etc. He moves to higher and higher states of bliss.

2.40 Sauchā-swānga-jugupsā parais-sansargah

Physical / external cleanliness is a never ending process. Infinite amount of soap, water and perfume will not be able to maintain external cleanliness on an ongoing basis. We shall need to brush our teeth, have a bath, change clothes, cut nails …etc. on a regular basis throughout our lifetime.

The body is not-that-pure as we tend to believe. As such we should neither have an inordinate attachment to it, nor neglect it. The soul will leave it one day or the other, just as we change old clothes for new ones. The body is a medium to acquire the right knowledge, differentiate between truth and untruth, righteousness and evil as well as be duty bound and avoid negligent behaviour.

Saucha at the physical and mental level quieten down carnal infatuation visà-vis own body and more so towards others subside. *Saucha* also has an inner aspect. Inner cleanliness has as much to do with the healthy functioning of our bodily organs along with clarity of the mind. Physical and breathing exercises are essential for attaining inner purity.

Physical fitness is the sum of a toned and toxin-free body. Breathing exercises cleanses our respiratory system, oxygenates our blood, burns out toxins & damaged cells, removes blockages and soothes our nervous system with propensity to increase brain usage capacity.

Cleansing the mind of its disturbing emotions like attachment, hatred, passion, anger, greed / lust, attraction / delusion and pride is more important than the physical cleansing of the body.

Besides external cleanliness (our body and environment) and internal cleanliness (thoughts) we need to also focus on the hygiene standards of earnings and food – untainted by any form of violence, untruth, theft, corruption …etc., i.e. comply to Yama. *"Jaisā anna vaisā mana, jaisā āhāra vaisā vichāra, jaisa vichāra vaisa vyavahāra"*

2.41 Satva-shuddhi-saumanasya-ekāgrahya-indriyajaya-ātmadarshan-yogatvāni cha

Cleanliness and purity of body and mind causes purification of the subtle mental essence, clarity of mind & intelligence, alertness, cheerfulness, satisfaction, positivity, focus and …control over the senses; capacity building to attain self-realization.

2.42 Santoshād-anuttama-sukha lābha

Santosha is the state where we are satisfied with the fruits of our actions after having put up our utmost efforts. An attitude of contentment yields higher and higher levels of happiness and a stress-free living, a balanced life. It diminishes unhappiness, increases our resilience to difficulties, empowers us to rise after every fall and increases our faith in God and / or nature.

The Almighty is also All-justice. He will make good for any shortfall in the fruits of our actions in relation to our efforts. We become more flexible to perform selfless service. Life becomes a process of growth through all kinds of circumstances.

Yogi Bramdeo Mokoonlall, Darshanācharya
(Snātak - Darshan Yog Mahavidyālaya)
Arya Sabha Mauritius

Bibliography :

Satyārtha Prakāsh, RigVedādi Bhāshya Bhumikā, *(Maharishi Dayānand Saraswati)*
Yoga Darshanam *(Maharishi Patanjali, Vyāsa Bhāshya & Yogārtha Prakāsh Swami Satyapati Ji Parivrājak)*

The Class and Order of an individual should be determined by his merits.

Light of Truth

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
(४) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, *दर्शनाचार्य*
इस अंक में जितने लेख आये हैं, इनमें लेखकों के निजी विचार हैं । लेखों का उत्तरदायित्व लेखकों पर है, सम्पादक-मण्डल पर नहीं ।
Responsibility for the information and views expressed, set out in the articles, lies entirely with the authors.
मुख्य सम्पादक
Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

VACANCY

Applications are invited from suitable candidates for the post of 'Night-Watchman' at Dr Chiranjiv Bhardwaj Ashram, Belle Mare.

For terms and conditions, candidates may liaise with Arya Sabha Mauritius on 212 2730

Closing date : 30.09.16 by 3.00 p.m.

Manager

SHRAWANI UPAKARMA 2016

Pt. Jaychand Aukhojee, Arya Bhooshan

'Shrawani Upakarma' has been proclaimed 'Ved month' or 'Ved mas' by the Arya Sabha Mauritius. It started from the Guru Purnima 19th of July till the next Purnima 18th of August. The opening ceremony was held at the Pt. M. Mohith Hall, Arya Sabha Mauritius and the closing ceremony at the hall of the Mahebourg Arya Samaj. Both ceremonies were performed with 'Bahukundiya Yajna' and were telecast live by the MBC. Eminent personalities were present on that occasion.

I was assigned to perform four 'Shrawani Yajna' in the four affiliated branches by the Arya Sabha.

1. Valton Arya Samaj No. 237 on 23.07.16. Special oblations with verses of Yajur Veda Chap. 3. Verse No. 60 and some others were explained. Attendance about 200. Lunch was served.
2. Bois Rouge Arya Samaj, Pamplemousses No. 27 on 31.07.16. Special oblations with verses of Chap. 10 with explanation of no. 10. Attendance about 20
3. Mon Gout Arya Samaj No. 5 on 20.08.16. Special oblations with verses of Yajur Veda Chap. 16, mantra no. 41 was explained. Attendance about 50
4. Pamplemousses Arya Samaj no. 108 on 27.08.16. Special oblations with chapter 17, Verse no. 73 was explained. Attendance about 50

The assisting priests were Panditas Smt. D. Pokhraj and Smt. L. Mungroo. Special guests Dr J. Lallbeeharry, Shri G. Teeluck and Pt. M. Boodhoo addressed the audiences on these occasions.

Besides these four celebrations, I performed some six others on request of individual families, two of them had made very special and splendid organisations.

5. Shri Satyanand Bhoyroo and family at Ville Bague on 24.07.16, Chapters 31 and Yogi Bramdeo Mokoonlall Darshanacharya. Yajna with two Hawan Kunds. Attendance about 200
6. Shri Sookraj Bissessur and family at Ilot on 21.08.16, chapters 31 and 40 as above Special Guest -- Dr J. Lallbeeharry. Attendance of about 200. At these two families decorated tents were built at both places no. 5 and no. 6 and lunch were served.

Attentions of audiences were drawn on the following rules and principles :

1. All the spiritual activities like hawan, prayers, hymns, satsang etc. must begin at the scheduled time.
2. Participants and guests must not be late at all as God is concerned in these activities.
3. They should do it properly with unveiled eyes, ears and minds.
4. They should never talk or gossip among themselves, nor read any magazine, all mobile telephones off.
5. All the participants must clean or wash their hands and mouth (aachmanyam) before sitting in the tent to make themselves eligible yajman for performing the three last oblations of Purnahuti. In his way, they can feel that they two are concerned in the yajna.
6. In a mahayajna, everybody should bring some yajna materials like camphor, samagri, samidha, flower and a small coin of money for aartee etc.
7. Human values respect, truth, politeness, obedience, fidelity, gratitude, loyalty, love etc must be taught at home to children by elders and at school, colleges and universities by teachers and lecturers.
8. During Shrawani month every family must perform a yajna by a pandit at his residence even if they can do it by themselves, in order to feel having a Guru Darshan. This will have a very good effect in children and youngsters.

सूचना

पाठकों की सेवा में विदित हो कि वैदिक धर्म और आर्यसमाज के मन्तव्यों से सम्बन्धित विपुल वैदिक साहित्य ऋषि दयानन्द संस्थान के पुस्तकालय, पाई में उपलब्ध है। साथ ही महापुरुषों की जीवनियाँ भी उपलब्ध है ।

पाठकों से निवेदन है कि वे सोमवार से शनिवार तक प्रातःकाल १०.०० बजे से ३.०० बजे के बीच Rishi Dayanand Institute, M2 Lane, Avenue Michael Leal, Pailles के 'श्रीमती कुलवन्ती झमन पुस्तकालय' से अध्ययनार्थ पुस्तकें प्राप्त कर सकते हैं। कुछ पुस्तकों के शीर्षक इस प्रकार हैं –

१. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका
२. सत्यार्थप्रकाश
३. श्रीमद्भागवद्गीता
४. संस्कार-विधि
५. विज्ञान की कसौटी पर योग
६. वेद-प्रवचन
७. सरल सत्यार्थप्रकाश
८. वेदों द्वारा आर्यसमाज के दस नियमों का सन्देश
९. प्राकृतिक चिकित्सा
१०. ऋषि दयानन्द का तत्त्व दर्शन
११. उपनिषद् प्रकाश
१२. उपनिषद् एक सरल परिचय
१३. धर्म का आदि-स्त्रोत
१४. महाभारत
१५. यज्ञ - थैरेपी
१६. श्रीमद्भगवद्गीता गीतामृत
१७. वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार
१८. संस्कृत वाणी (भाग १)
१९. संस्कृत वाणी (भाग २)
२०. संस्कृत वाणी (भाग ३)

Neermala Sookar
Rishi Dayanand Institute, M2 Lane, Avenue Michael Leal, Pailles